सत्यनारायण व्रत कथा

पूजन विधि तथा आरती सहित

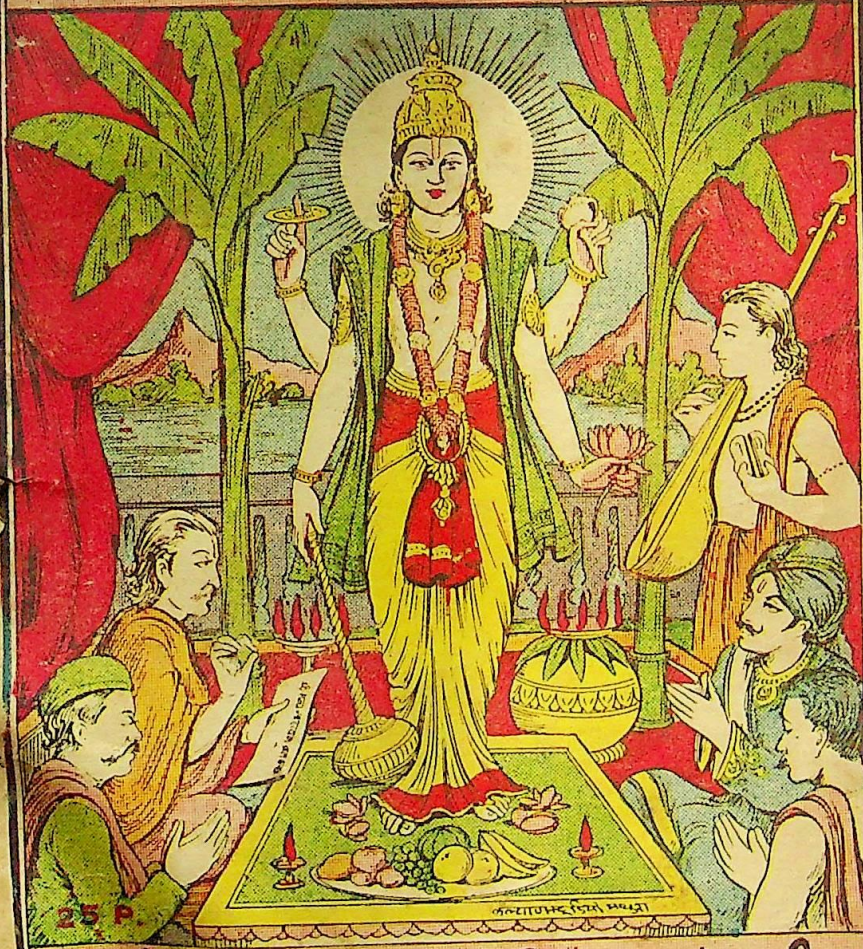

25 P.

देहाती पुस्तक भंडार चावड़ी बाजार देहली ६

SABHA AMBPH... LIBRARY
Date............

श्री सत्यनारायण व्रत कथा

सामग्री

श्रीफल, केशर, चन्दन, अबीर, गुलाल, धूप, कलावा, कपूर, लौंग, पंचामृत (दूध, दधि, घृत, शहद और शक्कर), केलाफल, केलापत्ती, फूलमाला, तुलसीदल, आम्रपल्लव, वंदनवार, ऋतुफल, स्वर्णमूर्ति, आसन, अंगवस्त्र, यज्ञोपवीत मिष्ठान्न, पत्रावली, घट, नैवेद्य, दीपशलाका, जल, आचमनी तथा चौकी।

व्रत पूजा विधि

व्रत करने वाला पूर्णिमा, संक्रान्ति, अमावश, दशमी अथवा जिस दिन चाहे सायंकाल में स्नानादि से निवृत्त होकर पूजा स्थान में आसन पर बैठकर आचमन लें। और श्री गणेश, गौरी, वरुण, विष्णु सब देवताओं का ध्यान करके संकल्प करें कि मैं सत्यनारायण स्वामी का पूजन तथा श्रवण सदैव करूंगा। फिर गणेशादि देवताओं की पूजा करें। पुष्प हाथ में लेकर सत्यनारायण का ध्यान करें। यज्ञोपवीत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आदि से युक्त होकर स्तुति करें—भगवान् मैंने श्रद्धापूर्वक फल, जल आदि सब सामग्री आपके अर्पण की है। इसे स्वीकार कीजिये। आपदाओं से मेरी रक्षा कीजिये। यह कहकर सत्यनारायण की कथा पढ़ें अथवा श्रवण करें। कथा प्रसंग—

एक समय नैमिषारण्य तीर्थ में शौनकादि अट्ठासी हजार ऋषियों ने श्री सूत जी से पूछा— हे प्रभो, इस कलियुग में वेद विद्या रहित मनुष्यों को प्रभु भक्ति किस प्रकार मिलेगी तथा उनका उद्धार कैसे होगा। इसलिए मुनिश्रेष्ठ कोई ऐसा तप कहिये जिससे थोड़े समय में पुण्य प्राप्त होवे, तथा मनवांछित फल मिले। सो हमारी कथा सुनने की इच्छा है। सर्वशास्त्र ज्ञाता श्री सूत जी बोले—हे वैष्णवों में पूज्य! आप सबने सब प्राणियों के हित की बात पूछी है। अब मैं श्रेष्ठ व्रत को आप लोगों से कहूँगा, जिस व्रत का नारद जी ने लक्ष्मी नारायण जी से पूछा था और लक्ष्मी-पति ने मुनिश्रेष्ठ से कहा था। सो ध्यान से सुनें-

पहला अध्याय

एक समय योगिराज नारद दूसरों के हित की इच्छा से अनेक लोकों में घूमते हुए मनुष्य लोक में पहुँचे। वहाँ बहुत योनियों में जन्मे हुए

प्रायः सभी मनुष्यों को अपने अपने कर्मों के द्वारा अनेकों दुःखों से पीड़ित देखकर, 'किस यत्न के करने से निश्चय ही इनके दुःखों का नाश हो सकेगा' ऐसा मन में सोचकर विष्णु लोक को गये। वहाँ श्वेतवर्ण और चार भुजाओं वाले देवों के ईश नारायण को, जिनके हाथों में शंख, चक्र, गदा और पद्म थे तथा वनमाला पहने हुए थे' देखकर स्तुति करने लगे—हे भगवान्! आप अत्यन्त शक्ति से सम्पन्न हैं। मन तथा वाणी भी आपको नहीं पा सकती। आपका आदि, मध्य और अन्त नहीं। निर्गुण स्वरूप होते हुए अनन्त गुणों से युक्त हो। सम्पूर्ण सृष्टि के आदि भूत और भक्तों के दुःखों को नष्ट करने वाले हो, आपके लिए मेरा नमस्कार है। नारद जी से इस प्रकार की स्तुतियाँ सुनकर विष्णु भगवान् बोले—कि तू किसलिए आया है और तेरे मन में क्या है। हे महाभाग! मुख से कहो, जो पूछोगे वह सब मैं तुमसे कहूंगा। नारद बोले—मृत्यु लोक में सब

जो अनेक योनियों से मनुष्य योनि में पैदा हुए हैं, अपने-अपने कर्मों के द्वारा अनेक प्रकार के दुःखों से दुःखी हो रहे हैं। हे नाथ! यदि मुझ पर दया भाव रखते हैं तो बतलाइये कि उन मनुष्यों के दुःख थोड़े से प्रयत्न से ही कैसे दूर हो सकते हैं। श्री भगवान् बोले—हे नारद! मनुष्यों की भलाई की इच्छा से तूने यह बहुत अच्छी बात पूछी। जिस काम के करने से मनुष्य मोह से छूट जाता है, वह मैं कहता हूं, सुन। बहुत पुण्य का देने वाला, स्वर्ग तथा मनुष्य दोनों लोकों में दुर्लभ एक व्रत है। आज मैं प्रेमवश होकर के तेरे से उसे कहता हूं। सत्यनारायण जी का व्रत अच्छी तरह विधान के साथ करके मनुष्य तुरन्त ही यहाँ सुख भोगकर मरने पर मोक्ष को प्राप्त होता है। भगवान् के यह वचन सुनकर नारद मुनि बोले कि उस व्रत का क्या फल है, क्या विधान है और किसने उस व्रत को किया है और किस दिन यह व्रत करना चाहिए, वह सब विस्तार से कहो। दुःख,

शोक आदि को दूर करने वाला, यह धन-धान्य को बढ़ाने वाला, सौभाग्य तथा सन्तान का देने वाला, सब स्थानों पर विजयी करने वाला, भक्ति और श्रद्धा के साथ जिस किसी दिन मनुष्य श्री सत्य-नारायण भगवान् की सायं समय ब्राह्मणों और बन्धुओं के साथ धर्मपरायण होकर पूजा करे। भक्तिपूर्वक सवाया दे । नैवेद्य, केले का फल, घी, दूध और गेहूं का चूर्ण देवे। गेहूं के अभाव में साठी का चूर्ण, शक्कर तथा गुड़ ले और सब भक्षण योग्य पदार्थ इकट्ठे करके सवाये कर अर्पण कर देवे तथा बन्धुओं सहित भोजन करावे। भक्ति के साथ स्वयं भोजन करे। नृत्य, गीत आदि का आचरण कर सत्यनारायण भगवान् को स्मरण करता हुआ अपने घर जाये । इस तरह करने पर मनुष्यों की इच्छा निश्चय ही पूरी होती है। विशेषकर कलिकाल में इस पृथ्वी पर यही सरल उपाय है।

॥ इति श्री सत्यनारायण व्रत कथायां प्रथमोऽध्याय समाप्तं ॥

दूसरा अध्याय

सूत जी बोले कि हे ऋषियो ! जिसने पहिले समय में इस व्रत को किया है अब मैं उसे बताऊँगा। सुन्दर काशीपुर नगर में एक अति निर्धन ब्राह्मण रहता था। वह भूख और प्यास से बेचैन हुआ नित्य ही पृथ्वी पर घूमता था। ब्राह्मण से प्रेम करने वाले भगवान् ने ब्राह्मण को दुःखी देखकर बूढ़े ब्राह्मण का रूप धर उसके पास जा, आदर के साथ पूछा, हे—विप्र ! नित्य दुःखी हुआ तू क्यों पृथ्वी पर घूमता है ? हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! यह सब मुझ को कहो, मैं सुनना चाहता हूं। ब्राह्मण बोला—मैं बहुत निर्धन ब्राह्मण हूं भिक्षा के लिए पृथ्वी पर फिरता रहता हूं। हे भगवन् ! यदि आप इसका उपाय जानते हों तो कृपा कर कहो। वृद्ध ब्राह्मण बोला कि सत्यनारायण भगवान् मनवांछित फल को देने वाले हैं। इसलिए हे ब्राह्मण! तू उनका पूजन और व्रत कर, जिसको करने से मनुष्य सब दःखों

से मुक्त होता है। ब्राह्मण को व्रत का सारा विधान बतलाकर बूढ़े ब्राह्मण का रूप धारण करने वाले सत्यनारायण भगवान् वहाँ ही अन्तर्ध्यान हो गये। जिस व्रत को वृद्ध ब्राह्मण ने बतलाया है मैं उसको करूँगा, यह निश्चय करके उस ब्राह्मण को रात में नींद भी नहीं आई। अब वह सवेरे ही उठ, सत्यनारायण का व्रत करने का निश्चय कर भिक्षा के लिए चला। उस दिन ब्राह्मण को भिक्षा में बहुत धन मिला जिससे बन्धु-बांधवों के साथ उसने सत्यनारायण का व्रत किया। इस व्रत के प्रभाव से वह ब्राह्मण सब दुःखों से छूटकर अनेक प्रकार की सम्पत्तियों से युक्त हुआ। उस समय से वह ब्राह्मण प्रति मास व्रत करने लगा। इस तरह सत्यनारायण भगवान् के इस व्रत को जो करेगा वह सब पापों से छूटकर मोक्ष को प्राप्त होगा। आगे जो पृथ्वी पर सत्यनारायण का व्रत करेगा तो वह मनुष्य वहाँ के सब दुःखों से छूट जावेगा। यह नारद मुनि से नारायण का कहा हुआ व्रत मैंने

तुमसे कहा । हे विप्रो ! और अब मैं क्या कहूं। ऋषि बोले–हे मुने! संसार में इस ब्राह्मण से सुनकर किस-किस ने इस व्रत को किया, हम यह सब सुनना चाहते हैं। इसके लिए हमारे हृदय में बड़ी श्रद्धा है। सूत जी बोले–हे मुनियों ! जिस-जिसने इस व्रत को किया है वह सब सुनो। एक समय वह ब्राह्मण धन और ऐश्वर्य के अनुसार बन्धु-बान्धवों के साथ व्रत करने को उद्यत हुआ। उसी समय एक लकड़ी बेचने वाला आया और बाहर लकड़ियों को रखकर ब्राह्मण के घर गया। प्यास से दुःखी उस लकड़हारे ने ब्राह्मण को व्रत करते हुए देखा। ब्राह्मण को नमस्कार कर बोला कि आप यह क्या कर रहे हैं और इसके करने से क्या फल मिलता है, यह विस्तार से कहो। ब्राह्मण बोला—सब मनोकामनाओं को पूरा करने वाला यह सत्यनारायण का व्रत है। इसकी कृपा से मेरे यहाँ धन-धान्य आदि की वृद्धि हुई है। उससे इस व्रत के विषय में जानकर लकड़हारा बहुत प्रसन्न हुआ और जल पी, प्रसाद खाकर

सत्यनारायण देव के लिए मन में विचार किया कि आज लकड़ी बेचने से जो धन प्राप्त होगा उससे ही सत्यनारायण देव का उत्तम व्रत करूँगा। मन में यह विचार लकड़ियाँ सिर पर रख कर, जिस नगर में धनवान लोग रहते थे ऐसे सुन्दर नगर में गया। उस दिन उसे लकड़ियों का दाम चौगुना मिला। तब वह प्रसन्न होकर पक्के केले की फली, शक्कर, घी, दूध और गेहुँ का चूर्ण सब इकट्ठा कर और सवाया लेकर अपने घर को चला गया तथा सब भाइयों को बुलाकर विधि के साथ व्रत किया। उस व्रत के प्रभाव से लकड़हारा धन, पुत्रादिकों से युक्त हुआ और संसार का सुख भोग कर बैकुण्ठ धाम को चला गया।

॥इति श्री सत्यनारायण व्रत कथायां द्वितीययोध्याय समाप्तम्॥

तीसरा अध्याय

सूतजी बोले—हे श्रेष्ठ मुनियो! अब आगे की कथा कहता हुँ, सुनो—पहले समय में उल्का

मुख नाम का एक बुद्धिमान राजा था। वह सत्य-वक्ता और जितेन्द्रिय था। प्रतिदिन देव स्थानों में जाता तथा ब्राह्मणों को धन देकर सन्तुष्ट करता था। उसकी स्त्री कमल के समान मुख वाली और सती साध्वी थी। भद्रशीला नदी के किनारे उन दोनों ने सत्यनारायण का व्रत किया। उस समय वहां एक साधु वैश्य आया जिसके पास व्यापार के हेतु बहुत सा धन था। नौका को किनारे पर ठहरा कर राजा के पास गया और पूछने लगा, हे राजन! भक्तियुक्त चित्त से यह आप क्या कर रहे हैं? मेरे सुनने की इच्छा है। यह आज मुझे बतावें। राजा बोला—हे साधु! अपने बन्धु-बान्धवों के साथ पुत्रादि की प्राप्ति के लिए यह महाशक्तिवान सत्यनारायण भगवान् का व्रत व पूजन किया जा रहा है। राजा का वचन सुन साधु आदर के साथ बोला—हे राजन्! मुझसे इसका सब विधान कहो। मैं भी तुम्हारे कथनानुसार करूँगा। मेरे भी सन्तान नहीं है

और इससे निश्चय ही होगी। राजा से सब विधान सुन व्यापार से निवृत हो आनन्द के साथ घर गया। साधु ने अपनी स्त्री से सन्तान के देने वाले उस व्रत का समाचार सुनाया और कहा कि जब मेरेसन्तान होगी तब मैं इस व्रत को करूँगा। साधु ने ऐसा अपनी स्त्री लीलावती से कहा। एक दिन उसकी स्त्री पति के साथ आनन्दित हो सांसारिक धर्म में प्रवृत होकर सत्यनारायण भगवान् की कृपा से गर्भवती हो गई तथा दसवें महीने में उसके एक श्रेष्ठ कन्या का जन्म हुआ। दिन-दिन वह इस तरह बढ़ने लगी जैसे शुक्लपक्ष का चन्द्रमा बढ़ता है। कन्या कलावती का नामकरण संस्कार किया। पश्चात् लीलावती ने मीठे शब्दों में स्वामी से कहा कि आप संकल्प किया हुआ भगवान् का व्रत क्यों नहीं ? करते साधु बोला हे प्रिय ! इसके विवाह के समय पर व्रत करूँगा। अपनी स्त्री को आश्वासन देकर वह नगर को गया। कलावती पितृ-गृह में वृद्धि को

प्राप्त हो युवा हो गई। साधु ने जब नगर में सखियों के साथ कन्या देखी तो तुरन्त ही उस धर्मावत् ने दूत को बुलाकर भेजा कि कन्या के लिए अच्छे वर की खोज करें। साधु की आज्ञा पाकर दूत कांचन नगर को गया। वहां से वह एक वैश्य के पुत्र को लेकर आ गया। साधु ने सुन्दर गुणयुक्त वैश्य को देखकर जाति और बान्धुओं सहित सन्तुष्ट विधि के अनुकूल अपनी कन्या का उनके साथ विवाह कर दिया। प्रारब्ध से विवाह के समय साधु व्रत करना भूल गया जिससे सत्यनारायण भगवान् रुष्ट हो गये। अपने कर्म में प्रवीण (साधु) कुछ समय पीछे जमाता सहित व्यापार के लिए गया और समुद्र के समीप सुन्दर रत्नपुर नगर में जाकर व्यापार करने लगा। उस देश के राजा चन्द्रकेतु के नगर में पहुँचने पर सत्यनारायण भगवान् ने उसकी प्रतिज्ञा भ्रष्ट देख कर शाप दिया कि साधु को अत्यन्त दारुण दुःख मिले। एक दिन राजा के धन को लेकर

चोर वहां ही आये जहां ये दोनों ठहरे थे। पीछे से राजा के दूतों को दौड़ते हुए आते देखकर चोर भयभीत होकर माल वहां ही छोड़कर छिप गये। जब राजा के दूत साधु वैश्य के पास पहुँचे तो वहां राजा के धन को रखा देखकर उन दोनों वैश्यों को पकड़ ले गये। प्रसन्नता से दौड़ते हुए राजा के समीप जाकर बोले यह दो चोर हम लाये हैं देखकर आज्ञा दें। राजा की आज्ञा पाकर उनको तुरन्त दृढ़ता से बांधकर महा कारा-गार में बिना विचारे डाल दिया। सत्यनारायण भगवान् की माया के वशीभूत हो किसी ने उनका कहना नहीं सुना और उन दोनों का धन भी राजा चन्द्रकेतु ने ग्रहण कर लिया। उसी शाप द्वारा उनकी स्त्री भी घर पर बहुत दुःखी हुई और घर जो धन था वह भी चोरों ने चुरा लिया। शारीरिक और मानसिक पीड़ाओं से तथा भूख प्यास से अति दुखित हो अन्न की चिन्ता में घर-घर फिरने लगी। एक दिन वह भूख से पीड़ित

हुई ब्राह्मण के घर गई। वहाँ जाकर उसने सत्य-नारायण का व्रत देखा। वहां बैठकर कथा सुनकर प्रसाद भक्षण कर रात को घर गई। माता ने कलावती कन्या को प्रेम से कहा—हे पुत्री! रात में कहां रही तथा तेरे मन में क्या विचार है। कला-वती ने शीघ्र ही माता से कहा—हे माता! मैंने एक ब्राह्मण के घर मन चाहा फल देने वाला व्रत देखा है। कन्या के ऐसे वचन सुनकर वैश्य की स्त्री सत्यनारायण का व्रत करने की तैयारी करने लगी। उस वैश्य की स्त्री ने अपने कुटुम्बियों और बन्धुओं केसाथ व्रत किया और सत्यनारायण भगवान् से वर मांगा कि पति और दामाद शीघ्र ही घर आ जावें, और प्रार्थना की कि दोनों का अपराध क्षमा करो। सत्यनारायण भगवान् फिर इस व्रत से सन्तुष्ट हो गये। राजा चन्द्रकेतु को स्वप्न में दिखाई दिये और कहा कि हे राजन्! दोनों बंदी वैश्य प्रातः ही छोड़ देवें और वह सब धन दे देना जो तुमने उनका लिया है, नहीं तो

तेरा राज्य, धन, पुत्रादि सब नष्ट कर दूंगा। राजा को ऐसा कहकर भगवान् अन्तर्ध्यान हो गये और प्रातःकाल राजा चन्द्रकेतु ने अपने स्वजनों के साथ सभा में बैठकर सबको अपना स्वप्न सुनाया और दोनों वैश्यपुत्रों को शीघ्र छोड़ने को कहा।

संतरियों ने राजा के वचन सुन दोनों वैश्य-पुत्रों के बंधन खोल राजा के पास लाकर विनय-पूर्वक कहा कि हम दोनों वैश्यपुत्रों को बेड़ी के बंधन वे मुक्त कर ले आये हैं। इन दोनों ने राजा चन्द्रकेतु को प्रणाम कर पहली बातों को स्मरण करते हुए डर के मारे कुछ भी न कहा। राजा ने दोनों वैश्यपुत्रों को देख कर आदर सहित कहा—प्रारब्ध से तुमने अत्यन्त दुःख उठाया परन्तु अब कुछ डर नहीं है और उनकी बेड़ियां निकलवा कर हजामत आदि बनवाई। राजा ने उनको वस्त्राभूषण देकर कहा कि अब अपने घर जावें। वे दोनों राजा को नमस्कार कर अपने घर को चले गये।

॥ इति श्री सत्यनारायण व्रत कथायां तृतीयोऽध्याय समाप्तम् ॥

चौथा अध्याय

सूत जी बोले— वैश्य ने मंगलाचरण करके यात्रा आरम्भ की और ब्राह्मणों को धन देकर अपने नगर की ओर चला। वैश्य के थोड़ी दूर पहुँचने पर दंडी वेषधारी सत्यनारायण भगवान् ने वैश्य से पूछा कि हे साधु ! तेरी नाव में क्या भरा है ? अभिमानी वैश्य ने हंसते हुए उत्तर दिया कि हे दंडी ! आप क्यों पूछते हो, क्या मुद्रा लेने की इच्छा है ? मेरी नाव में बेल तथा पत्ते आदि भरे हुए हैं। वैश्य का कठोर वचन सुन कर भगवान् ने कहा कि तुम्हारा वचन सत्य हो। ऐसा कहकर तुरन्त ही दंडी उसके पास से चले गये और कुछ दूर जाकर समुद्र के किनारे पर आसन जमा दिया। दंडी के चले जाने पर वैश्य को नित्यक्रिया करने के पश्चात् नाव ऊँची उठी देखकर बहुत आश्चर्य हुआ। तथा नाव में बेल आदि देखकर मूर्छित हो भूमि पर गिर पड़ा। पुनः मूर्छा खुलने पर वैश्य बहुत चिन्तातुर हुआ।

उस समय उसके जमाता ने कहा कि आप शोक न करें, यह दंडी का श्राप है। वे सब कुछ कर सकते हैं इसमें सन्देह नहीं है, अतः उनकी शरण में चलना चाहिए तब ही हमारी इच्छा पूरी होगी। जमाता के वचन सुनकर वैश्य दंडी के पास पहुँचा और दंडी को देख अत्यन्त भक्ति भाव से सादर नमस्कार कर बोला—मैंने जो आप से असत्य वचन कहे थे उस मेरे अपराध को क्षमा करो। इस प्रकार बार-बार नमस्कार कर शोक से व्याकुल हो गया। उस वैश्य को इस तरह विलाप करते देखकर दंडी स्वामी ने कहा—रो मत और मेरे वचनों को सुन। तू मेरी पूजा से मुकर गया है। ऐ बुद्धिहीन तूने मेरी आज्ञा से पुनः २ दुःख पाया है। भगवान् के ऐसे वचन सुन वैश्य स्तुति करने को उद्यत हुआ। साधु बोला—हे भगवान् आपकी माया से मोहित हुए ब्रह्मा आदि देवता भी आप के रूप को नहीं जानते तब मुझसा दुर्बुद्धि आपकी माया से मोहित होकर कैसे जान

सकता है ? आप प्रसन्न होइये मैं ऐश्वर्य के अनुसार आपकी पूजा करूँगा। मुझ शरणागत की रक्षा करो और पहले के समान नौका में धन भर दो। वैश्य का भक्ति से भरा वचन सुनकर भगवान् प्रसन्न हो गये। उसकी इच्छानुसार वर देकर वहां ही अन्तर्ध्यान हो गये। तब वैश्य ने नौका पर चढ़ उसको भरी हुई देख कर कहा कि सत्यनारायण की कृपा से मेरा मन चाहा पूरा हुआ और साथियों सहित यथा विधि पूजन करके सत्यनारायण भगवान् की कृपा से अत्यन्त प्रसन्न हुआ। नाव को जोड़ अपने देश की ओर चला। साधु ने जमाता से कहा कि हमारी रत्नपुरी नगरी को देखो और अपने धन के रक्षक दूत को नगर में अपनी पत्नी तथा पुत्री को अपने आने की सूचना देने भेजा। दूत ने नगर में जाकर और वैश्य पत्नी को देखकर हाथ जोड़ नमस्कार कर अनुकूल वचन कहे। वैश्य जमाता तथा बन्धु-बांधव सहित नगर के

समीप आ गये हैं। दूत के ऐसे वचन सुन वैश्य की स्त्री बहुत प्रसन्न हुई और सत्यनारायण की पूजा कर अपनी कन्या से बोली कि हे पुत्री ! मैं चलती हूं और तू दर्शन करने के लिए शीघ्र आ। इस प्रकार के माता के वचनों को सुन और व्रत को समाप्त कर तथा प्रसाद को त्याग वह भी पति की ओर चली गई। उससे सत्यनारायण भगवान् ने क्रोध कर उसके स्वामी और धन सहित नौका को डुबो दिया। कलावती अपने पति को न देख कर रोती हुई भूमि पर जा गिरी। इस तरह नौका को न देख और कन्या को रोती देख वैश्य ने भयातुर हो कहा—यह क्या आश्चर्य हुआ ! या तो सत्यनारायण भगवान् ने नौका हरली अथवा मैं उन्हीं की माया से मोहित हो गया हूं। मैं धन ऐश्वर्य के अनुसार सत्यनारायण की पूजा करूँगा। ऐसा अपना मनोरथ सबको बुला कर कहा और बार-बार भूमि पर गिर कर सत्यनारायण भगवान् को प्रणाम किया। तब दोनों के पालन करने वाले

भगवान् प्रसन्न हुए। दया से पूर्ण होकर साधु से बोले कि तेरी कन्या प्रसाद को छोड़कर पति को देखने चली आई, इसलिए कन्या का पति अदृश्य हो गया। यदि वह घर जाकर प्रसाद खाकर लौट आए तो तेरी कन्या का पति मिल जायेगा। आकाश से ऐसा वाक्य सुनकर कलावती शीघ्र ही घर जाकर प्रसाद खाकर आई तो अपने पति को वहां पाया। तब कलावती अपने पिता के पास गई और कहा—अब घर को चलो, देर क्यों करते हो। कन्या के वचन सुन वैश्य सन्तुष्ट हुआ और सत्यनारायण का विधि विधान से पूजन कर बन्धु-बान्धवों सहित अपने घर को गया और पुर्णमासी तथा संक्रांति को सदैव सत्यनारायण का पूजन करने लगा। इस लोक में सुख भोग कर मरने के पश्चात् स्वर्ग को गया। सूत जी बोले—हे ऋषियो! अब आगे और कहता हूं सुनो।

॥इति श्री सत्यनारायण व्रत कथायां चतुर्थी अध्याय समाप्तम्॥

पांचवाँ अध्याय

प्रजा पालन में लीन तुँगध्वज नाम का राजा था। उसने भी सत्यनारायण भगवान का प्रसाद त्याग बहुत दुःख पाया। एक समय उसने वन में जा अनेक प्रकार के पशुओं को मार कर वह वड़ के पेड़ के नीचे आया। उसने भक्ति भाव से बन्धुओं सहित ग्वालों को सत्यनारायण का पूजन करते देखा। राजा देख कर भी अभिमान से न वहां गया, न नमस्कार किया। जब सब ग्वालों ने सत्यनारायण का प्रसाद राजा के समीप रखा तो राजा ने अभिमान के मद में प्रसाद को त्याग दिया। जब वह अपनी सुन्दर नगरी में पहुंचा तो अपने सौ पुत्रों तथा धन धान्यादि को नष्ट हुए पाया। भगवान् ने ही यह सब नाश किया ऐसा विश्वास है इसलिए मैं वहां जाता हूँ जहां भगवान का पूजन होता है। ऐसा मन में विचार के वह ग्वालों के समीप गया। तब उस राजा ने ग्वालों के साथ भाव भक्ति और श्रद्धा से सत्यनारायण भगवान्

का विधिपूर्वक पूजन किया। राजा सत्यदेव की कृपा से धन और पुत्रादिकों से सम्पन्न हुआ तथा संसार में सुख भोगकर मरने पर सत्य लोक को गया। जो मनुष्य परम दुर्लभ सत्यनारायण के व्रत को करता है और भक्ति भाव से फलदायिनी पुण्यकथा को सुनता है भगवान् की कृपा से उसको धन ऐश्वर्य प्राप्त होता है। निर्धन धन पाता है, बन्दी बन्धन से छूट कर सुख भोग कर सत्यलोक को जाते हैं। विप्रो! जिन्होंने पहले सत्यनारायण का व्रत किया है उनके जन्म की कथा कहते हैं। वृद्ध शतानन्द ने सुदामा का जन्म लेकर मोक्ष पाया, उल्कामुख नाम का राजा दशरथ होकर बैकुण्ठ को प्राप्त हुआ। साधु नामक वैश्य ने मोरध्वज बनकर अपने पुत्र को आरे से चीर कर मोक्ष प्राप्त किया। महाराज तुंगध्वज ने स्वयंभू होकर भगवान् के भक्तियुक्त कर्म कर मोक्ष को पाया।

॥ इति श्री सत्यनारायण व्रत कथायां पंचमोऽध्याय समाप्तम् ॥

श्री सत्यनारायण जी की आरती

जय लक्ष्मी रमणा श्री जय लक्ष्मी रमणा ।
सत्यनारायण स्वामी जन पातक हरणा ।। टेक ।।
रत्न जटित सिंहासन अद्भुत छवि राजे ।
नारद करत निरन्तर घन्टा ध्वनि बाजे ।। जय० ।।
प्रकट भये कलि कारण द्विज को दर्श दिया ।
बूढ़ा ब्राह्मण बनके कंचन महल किया ।। जय० ।।
दुर्बल भील कराल जिन पर कृपा करी ।
चन्द्रचूड़ एक राजा जिनकी विपत्ति हरी ।। जय० ।।
वैश्य मनोरथ पाया श्रद्धा तज दीनी ।
सो फल भोग्यो प्रभु जी फिर स्तुति कीनी ।। जय० ।।
भाव भक्ति के कारण छिन छिन रूप धरयो ।
श्रद्धा धारण कीनी उनका काज सरयो ।। जय० ।।
ग्वाल बाल संग राजा बन में भक्ति करी ।
मनवांछित फल दीनों दीनदयाल हरी ।। जय० ।।
चढ़त प्रसाद सवाया कदली फल मेवा ।
धूप दीप तुलसी से राजी सत्य देवा ।। जय० ।।
श्री सत्यनारायणजी की आरती जो कोई गावे ।
भगतदास सुख सम्पति मन वांछित फल पावे ।।
जय लक्ष्मी रमणा श्री जय लक्ष्मी रमणा ।।

आरती

ओ३म् जय जगदीश हरे, पिता जय जगदीश हरे ।
भक्त जनन के संकट क्षण में दूर करे ।। ओ३म् जय० ।।
जो ध्यावे फल पावे दुःख बिनशे मनका ।
सुख सम्पत्ति घर आवे कष्ट मिटे तनका ।। ओ३म् जय० ।।

मात पिता तुम मेरे शरण गहूँ किसकी।
तुम बिन और न दूजा आस करूं जिसकी ।। ओ३म् जय० ।।
तुम पूर्ण परमात्मा तुम अन्तर्यामी ।।
पारब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी ।। ओ३म् जय० ।।
तुम करुणा के सागर तुम पालन कर्त्ता ।।
मैं सेवक तुम स्वामी कृपा करो भर्ता ।। ओ३म् जय० ।।
तुम हो एक अगोचर सबके प्राण पति।
किस विधि मिलूं दयामय तुमको मैं कुमती ।। ओ३म् जय० ।।
दीन बन्धु दुःख हरता तुम रक्षक मेरे।
करुणा हस्त उठाओ शरण पड़ा तेरे ।। ओ३म् जय० ।।
विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा।
"श्रद्धा" भक्ति बढ़ाओ सन्तन की सेवा ।। ओ३म् जय० ।।
।। समाप्त ।।

प्रत्येक खरादी मैकेनिक, डाइ फिटर, बेंच फिटर, तथा हर मशीन पर काम करने वालों के लिये

मशीन शाप ट्रेनिंग

लेखक कालीचरण

मशीनों के बिना कोई देश उन्नति नहीं कर सकता। इसमें मशीन शाप में होने वाले सब प्रकार के काम, काम आने वाले टूल व औजार, ड्रिल मशीन, खराद मशीन, शेपर मशीन, प्लेनर मशीन, मिलिंग मशीन आदि का विवरण और उनसे काम लेने का तरीका सरल प्रश्नोत्तर रूप में समझाया गया है। पृष्ठ ३५२, क्लाथ बाईंडिंग, मूल्य १०) दस रुपया, डाक खर्च १।) अलग।

हर प्रकार की पुस्तकें वी०पी० द्वारा मंगाने का पता—

देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

फोन नं० २६१०३०

मुद्रक—आर० के० प्रिण्टर्स, ८० डी० कमलानगर, दिल्ली-६

घर बैठे अंग्रेज़ी सीख कर हज़ारों कमाइए !

वह प्रसिद्ध पुस्तक जिसे पढ़ कर लाखों ने मैट्रिक पास कर किया
और आज बड़ी-बड़ी नौकरियाँ कर रहे हैं

छः रुपये में मैट्रिक पास—राजेश्वर कुमार गुप्त

दुनिया के एक कोने से दूसरे कोने तक अंग्रेजी बोली जाती है। संसार के छोटे-बड़े व्यापारों में, मिलों और कारखानों में और साइंस के नवीन आविष्कारों में विश्व व्यापी अंग्रेजी भाषा का बोलबाला है। आप अंग्रेजी नहीं जानते तो आप दुनिया से अलग पड़े रहेंगे। सीखिए, अंग्रेजी सीखना बहुत ही सरल है। अंग्रेजी परिवार में जिस प्रकार बच्चे अपनी माताओं से अंग्रेजी सीख लेते हैं, आप भी उस ईश्वरीय देन के मुताबिक केवल एक घण्टा प्रतिदिन हमारी इस पुस्तक को पढ़कर तीन माह में मैट्रिक की योग्यता प्राप्त कर सकते हैं। मूल्य ६) छः रुपया, डाक खर्च माफ।

ड्रामे खेलने वालों तथा नाटकों के प्रेमियों को खुशखबरी

यदि आप तरक्की पसन्द हैं, समाज का उत्थान तथा नवयुग का निर्माण चाहते हैं तो जगदीश शर्मा के क्रान्तिकारी नाटक अवश्य पढ़ें, जो मंच के लिए सरल, रोचक तथा उत्तम सिद्ध होंगे। सभी नाटक एक ही सैटिंग (सीन) के सवा दो घण्टे के हैं। आठ नाटक एक साथ १०.०० दस रुपये में।

जगदीश शर्मा के सामाजिक नाटक कीमत फी नाटक १.२५ न० पैसे

१, ग्रेजुएट पागल	१५. विदाई	२९. ग्राम पंचायत
२. सुहागन	१६. तहजीब	३०. अभागिन
३. डेढ़ रोटी	१७. जय जय हिन्दुस्तान	३१. इल्जाम
४. सिपाही	१८. दहेज १९. तड़प	३२. सुखी कौन (हिन्दुस्तान हमारा)
५. नर्स	२०. चांदी का जूता	३३. सहारा
६. पगली	२१. शुक्रिया	३४. अंधी तकदीर
७. गुमराह	२२. फूल माला	३५. इन्कलाब
८. शहन्शाह	२३. शराफत	३६. लक्ष्मी हरण
९. विधवा	२४. तीन एकांकी	३७. प्यास
१०. पुजारी	२५. धर्म इमान	३८. अंधेर नगरी
११. एक रात	२७. कलंक या वेश्या	३९. दिवाला
१२. फर्ज और मुहब्बत	२७. हमारा समाज	४०. रामलीलानाटक नौ भाग
१३. बाप बेटी	२८. लौट के बुद्धू घर को आये	
१४. आखिरी करवट		

उपरोक्त कोई से आठ नाटक एक साथ मंगाने पर डाक खर्च माफ अर्थात् १०) दस रु० की वी० पी० की जावेगी।

हर प्रकार की पुस्तकें मिलने तथा वी० पी० द्वारा मंगाने का एकमात्र स्थान

देहाती पुस्तक भंडार, (V. V. Book) चावड़ी, दिल्ली-६

रोतों को हंसाने वाली तथा बीमारों को खुश रखने वाली पुस्तक

अकबर बीरबल विनोद—शिवानन्द शर्मा

बादशाह अकबर ने बीरबल से जिस समय जैसा-जैसा गूढ़ प्रश्न किया और बीरबल ने जैसा और जिस सरलता से उसका उत्तर दिया, वह बुद्धिमानों के मनन करने की बात है। इसका एक-एक सवाल व जवाब मनोरंजक व शिक्षाप्रद है। जिनको सीधे मुँह से उत्तर देना तक भी नहीं आता था वे लोग इस पुस्तक का मनन कर बड़े ही सभा-चतुर बन गये हैं। क्या यह लाभ थोड़ा है? मूल्य २·५० ढ़ाई रुपया डाक व्यय १·३७ नए पैसे अलग।

फोटो भी जिन्दगी की सच्ची यादगार है

फोटोग्राफी शिक्षा (सचित्र)

कैमरे से फोटो खींचना भी सीखने की बात है। इस किताब में कैमरे की तस्वीरें देकर समझाया गया है कि फोटो किस तरह ठीक और साफ खींची जा सकती है। आप कुछ ही दिनों में एक कुशलफोटो ग्राफर बनकर विदेशी फोटो-ग्राफरों की तरह प्रसिद्धि प्राप्त करके हजारों रुपया कमा सकते हैं। मूल्य ६·०० छ; रुपये, डाक व्यय १·५० अलग।

केवल आसमान की तरफ टिकटिकी लगाकर देखने वाले किसान भाइयों के लिए

ट्यूबवैल गाइड—पुष्पनाथ पंगोतरा

खेती-बाड़ी का काम करने वालों के लिए यह उपयोगी पुस्तक है। जहाँ आबपाशी का कोई साधन न हो, वहाँ ट्यूबवैल लगा कर आबपाशी की जा सकती है। इस पुस्तक में ट्यूबवैल के बारे में हर प्रकार का ज्ञान, जमीन, मिट्टी, बोरिंग, पानी का ज्ञान, ट्यूबवैल लगाने के साधन, इंजन के पुर्जों की बनावटों तथा इंजन के बिगड़ जाने पर ठीक करने, पम्प की खराबियों को ठीक करना, आबपाशी के हिसाब आदि बातों का पूर्ण ज्ञान चित्रों सहित बड़ी सरल व सुन्दर भाषा में विस्तार से लिखा गया है। मूल्य ३·५० साढ़े तीन रुपये, डाक व्यय १·३७ नए पैसे अलग।

प्रत्येक मारवाड़ी भाई के लिये उपयोगी पुस्तक

मारवाड़ी गीत संग्रह—मोहनलाल मारवाड़ी

राजस्थानी बन्धुओं के लिए जन्म से विवाह तक के समस्त नेगों पर गाए जाने वाले गीत करमवाद, देवी-देवताओं के गीत, रतजगा, जापा, विवाह, वासोड़ा, गनगौर, होली, सावन आदि के साथ-साथ और भी अनेक नवीन गीतों का संग्रह, मूल्य केवल ४·५० साढ़े चार रुपया, डाक खर्च १·५० अलग।

हर प्रकार की पुस्तक मिलने तथा वी० पी० द्वारा मंगाने का एक मात्र स्थान

देहाती पुस्तक भण्डार, (V.V. Book) चावड़ी, दिल्ली-६

राज मिस्त्रियों, लोहारों, आर्कीटैक्टों और लोहे से सम्बन्धित भाइयों के लिये

मिस्त्री डिजायन बुक—रामअवतार 'वीर'

इस पुस्तक में बिल्डिंग बनाने वालों के लिए विश्वकर्मा पूजन विधि से लेकर भूमि की जाँच, बुनियाद, लेंटर, गार्डर, छत, फर्श, दिवारों और मार्बल चिप्स का हिसाब तथा राजमिस्त्रियों, बढ़इयों, नक्काशी का काम करने वालों, सीमेंट की जालियाँ बनाने वालों, डिजायनरों, आर्टीटैक्टों, लोहारों और लोहे का सामान बनाने वाले मिस्त्रियों के काम में आने वाले नई-नई चीजों के हजारों माडॅन डिजायन दिए गए हैं। पृष्ठ संख्या बड़ा साइज में ६००, डिजायन संख्या लगभग दो हजार, मूल्य २५.५० साढ़े पच्चीस रुपये डाक व्यय अलग।

प्रत्येक हिन्दू नर नारी को पढ़ना चाहिए

श्याम सुख सागर—श्री मद्भागवत के सम्पूर्ण १२ स्कन्ध

ले०—नरसिंह 'श्याम' एम० ए०, साहित्यरत्न

इसमें भगवान् के २४ अवतारों की पूरी-पूरी जानकारी होती है। भाषा इतनी सुन्दर तथा मोटे टाइप में है कि स्त्रियाँ तथा बूढ़े लोग भी आसानी से पढ़कर भगवद् कथा का रसपान कर सकते हैं। कथा करने के लिए अत्यन्त उपयोगी है। पक्की जिल्द, बढ़िया कागज और छपाई तथा सुन्दर चित्रों सहित बड़ा साइज में पुस्तक का मूल्य १४.०० चौदह रु०, डाक खर्च अलग।

इस घोर कलियुग में रामायण के प्रचार से ही बेड़ा पार है

आदर्श बाल्मीकीय रामायण भाषा—पं० जयगोपाल

पाँचवाँ शुद्ध एवं सचित्र संस्करण

इस ग्रन्थ में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् की शिक्षा-प्रद सम्पूर्ण कथा को बहुत सुन्दरता से छपवाया गया है। इस पुस्तक की भाषा बहुत ही मधुर और सरल है, जिसको स्त्री पुरुष, बाल तथा वृद्ध सुगमता से पढ़कर और समझकर पूरा आनन्द उठा सकते हैं। यह ग्रन्थ हर घर का दीपक अर्थात् अन्धेरे में प्रकाश है। पुस्तक में बीसियों चित्र दिए गए हैं। बड़ा साइज में पृष्ठ संख्या ६१२ है, मूल्य १२·०० बारह रुपये, डाक व्यय माफ।

रबड़ की मोहरें बनाना—कालीचरण गुप्ता

हर भाषा में भिन्न-भिन्न डिजायन व शक्ल की रबड़ की मोहरें बनाने और इस व्यापार को उन्नति पर पहुँचाने वाली पुस्तक है। पुस्तक सचित्र व सजिल्द है। मूल्य केवल २·५० ढ़ाई रुपया, डाक व्यय १.३७ पृथक।

हर प्रकार की पुस्तकें मिलने तथा वी. पी. द्वारा मँगाने का एक मात्र स्थान

देहाती पुस्तक भंडार, (V. V. Book) चावड़ी, दिल्ली-६

टैक्निकल इन्स्टीट्यूटों में स्वीकृत सिलेबस के अनुसार

वायरलेस रेडियो गाइड—प्रो० नरेन्द्रनाथ

प्रस्तुत पुस्तक में रेडियो रिसीवर के प्रारम्भिक नियम, लाउडस्पीकर व एम्प्लीफायर इक्विपमेंट के नियम तथा आम, नये रेडियो बनाने के उपाय, ट्रांसमिशन का सिद्धान्त और लोकल, आल इण्डिया तथा आल वर्ल्ड के रिसीवरों के अनेकानेक डायग्राम्स दिए गए हैं। अपने फालतू समय में इसकी सहायता से थोड़ा पढ़ा-लिखा मनुष्य भी २००.०० रु० प्रति मास आसानी से कमा सकता है मूल्य ८।) सवाआठ रुपया डाक व्यय १।।) अलग।

आदर्श कशीदाकारी—लाजवन्ती

नये-नये डिजाइन, छोटे-बड़े बेल-बूटे, क्रासस्टिच, कटवर्क, मोतियों का काम, सीनरियाँ, मोनोग्राम, तकिये के दोहे, पेटीकोट के बार्डर, कमीज़ों के गले, स्मोकिंग, लेडीडेज़ी तथा आधुनिक ढँग की सभी चीज़ें दी गई हैं। मूल्य ४।।) साढ़े चार रुपया, डाक व्यय १।।) अलग।

इस घोर कलियुग में दुर्गा माता की आराधना अत्यन्त आवश्यक है

दुर्गा पुष्पांजली—न्यादर सिंह 'बेचैन' देहल्वी

आज भारत की देवियाँ पश्चिमी सभ्यता में रंगी हुई अपने देश के ऊँचे आदर्श को भूलती जा रही हैं। इस समय दुर्गा पुष्पाँजली के प्रचार की आवश्यकता है। दुनिया के तमाम आडम्बरों से बच कर घर में ही ऋद्धि-सिद्धि, सुख-सम्पत्ति प्रवाहित करने के लिए प्रत्येक नारी को इस दुर्गा पुष्पाँजली का नित्य प्रति पाठ करना चाहिए।

इसमें नई-नई तर्जों के गीत, भजन, आरतियाँ दिये गये हैं। २०८ पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मू० २·५० नये पैसे डा. ख. १.३७ नये पैसे पृथक्।

प्रत्येक घर गृहस्थी के लिये

गृहस्थ-सूत्र-काशीराम चावला—इस पुस्तक में उन आवश्यक रहस्यों का उल्लेख है जो नई शादी हुए जोड़ों के लिए ज़रूरी ही नहीं लाभदायक भी है। शादी के बाद गृहस्थी का सच्चा सुख क्या होता है? नये जोड़े नहीं जानते और लज्जा के कारण किसी से पूछ भी नहीं पाते। यह पुस्तक आपको एक अच्छे मित्र का काम देगी। इसका अध्ययन करना इतना ज़रूरी है जितना मनुष्य को धूप, पानी और हवा। भारत वर्ष के लाखों जोड़े इस पुस्तक को पढ़कर अपना जीवन सुखमय बना चुके हैं। पृष्ठ लगभग ६०० सचित्र (Cloth binding), उस पर भी मूल्य ६.०० नौ रुपया, डाक व्यय २.०० रु० अलग।

हर प्रकार की पुस्तकें मिलने तथा वी० पी० द्वारा मंगाने का एकमात्र स्थान

देहाती पुस्तक भंडार, (V. V. Book) चावड़ी, दिल्ली-६

बिना मास्टर की सहायता के हारमोनियम, तबला, सितार, बांसुरी, बेंजो सीखो

फिल्मी हारमोनियम गाइड—राम अवतार 'वीर'

जब आप सिनेमा के पर्दे पर किसी को मधुर और रसीले गीत गाते सुनते हैं तो आपकी इच्छा होती है कि आप भी हारमोनियम बाजे पर उस मधुर गीत को गाएं। इस किताब में पहले आपको हारमोनियम बजाने की शिक्षा दी गई है। उसके बाद प्रसिद्ध-प्रसिद्ध फिल्मों के गीतों को हारमोनियम पर बजाना सिखाया गया है। इसके अतिरिक्त तबला, सितार, बांसुरी, बेंजो, आदि बजाने की भी शिक्षा दी गई है। मूल्य २·५० ढाई रु०, डाक खर्च १·२५ अलग।

लोक तथा परलोक सुधारने वाला ग्रंथ

बड़ा भक्तिसागर—सोहनलाल.....

इस पुस्तक में ईश्वर प्रार्थना, हनुमान चालीसा, आरतियाँ, सूर्य पुराण, वेदों के मन्त्र, भगवद्-विनय, कमलनेत्र स्तोत्र, शिव चालीसा, बजरंग बाण, कीर्तन, हरिहर स्तोत्र, व सन्ध्या समय व भोजन तथा सोते समय की प्रार्थना नित्य कर्म की पद्धति, दिनचर्या, गीता का अठारहवां अध्याय माहात्म्य सहित और बहुत-सी धार्मिक चीजें लिखी गई हैं। यह पुस्तक स्त्री, पुरुषों व विद्यार्थियों सभी के लिए समान रूप से उपयोगी और सत्संगों में कथा करने के लिए विशेष उपयोगी है। मूल्य ३·०० तीन रु.। डाक व्यय १।।) अलग।

विवाहित जीवन को सुखमय बनाने वाली पुस्तक

महिला मंजरी—सत्यकाम सिद्धान्त शास्त्री

इस पुस्तक में पाक विज्ञान, स्वास्थ्य विज्ञान तथा नारी के बनाव-शृंगार आदि हर विषय पर पूरा प्रकाश डाला गया है। स्त्री-शिक्षा पर यह ३८४ पृष्ठों का सम्पूर्ण ग्रन्थ है, मूल्य ६) छः रुपया, डाक व्यय १.५० पृथक्।

जीवन का दुःख-सुख बताने वाला अद्भुत ग्रन्थ

ज्योतिष विज्ञान—पं० विशुद्धानन्द

इस पुस्तक द्वारा जन्म जन्मान्तर के हाल कहना, जन्म कुण्डली बनाना और उसका हाल कहना, मौत व जिन्दगी बताना, गुप्त प्रश्नों का ठीक-ठीक उत्तर देना, वर्ष फल बनाना, माल की तेजी मन्दी तथा भविष्य का फल कहना, सबके मूहूर्त और शकुन बताना, विवाह शोधना, बिना देखे जन्म समय का हाल कहना, सूर्य, चन्द्रमा आदि ग्रहों को स्पष्ट करना, गणित और फलित ज्योतिष आदि के तमाम गूढ़ रहस्यों को सरल भाषा में समझाया गया है। विद्वानों तथा साधारण जनता के लिए ज्योतिष शास्त्र सम्बन्धी ज्ञान का अपूर्व संग्रह है, जिसको पढ़कर थोड़ा हिन्दी पढ़ा मनुष्य भी ज्योतिष का पूरा ज्ञान प्राप्त कर सकता है। मूल्य ६) छः रुपया, डाक व्यय १।।) पृथक्।

हर प्रकार की पुस्तकें मिलने तथा वी० पी० द्वारा मंगाने का एक मात्र स्थान

देहाती पुस्तक भंडार, (V. V. Book) चावड़ी, दिल्ली-६

संगीत तथा नृत्य

१. फिल्मी हारमोनियम गाइड २.२५
२. सुन्दर हारमो० पुष्पाँजलि ३.००
३. संगीत सरोवर १०.५०
४. फिल्मी बैंजो गाइड २.५०
५. म्यूजिक टीचर ३.५०
६. फिल्मी बेला २.५०
७. तबला गाइड २.५०
८. सितार शिक्षा २.५०
९. दिलरुबा गाइड २.५०
१०. फिल्मी जलतरंग २.५०
११. शास्त्रीय कंठ संगीत २.५०
१२. कबीर संगीत भजनामृत २.५०
१३. सूर संगीत भजनामृत २.५०
१४. तुलसी संगीत भजनामृत २.५०
१५. गुरु नानकभजनामृत २.५०
१६. मीरा संगीत भजनामृत २.५०
१७. सहजोबाई भजनामृत २.५०
१८. दादू भजन संगीतामृत २.५०
१९. बाँसुरी गाइड २.५०
२०. संगीत वाटिका ४.५०
२१. मधुरकण्ठी (आवाज सुरीली) ३.००
२२. भक्ति संगीत प्रकाश १०.५०

पूजा पाठ

१. चैत्र माहात्म्य भाषा १.५०
२. चैत्र माहात्म्य भाषा टीका ४.००
३. बैशाख माहात्म्य भाषा १.५०
४. बैशाख माहात्म्य भा. टी. ४.००
५. जेठ माहात्म्य भाषा १.५०
६. जेठ माहात्म्य भाषा टीका ४.००
७. आषाढ़ माहात्म्य भाषा १.५०
८. आषाढ़ माहात्म्य भा. टी. ४.००
९. श्रावण माहात्म्य भाषा १.५०
१०. श्रावण माहात्म्य भा. टी. ४.००
११. भादों माहात्म्य भाषा १.५०
१२. भादों माहात्म्य भा. टी. ४.००
१३. आश्विन माहात्म्य भाषा १·५०
१४. आश्विन माहात्म्य भा. टी. ४.००
१५. कार्तिक माहात्म्य भाषा १·५०
१६. कार्तिक माहात्म्य भा. टी. ४.००
१७. अगहन माहात्म्य भाषा १.५०
१८. अगहन माहात्म्य भा. टी. ४.००
१९. पौष माहात्म्य भाषा १.५०
२०. पौष माहात्म्य भाषा टीका ४.००
२१. माघ माहात्म्य भाषा १.५०
२२. माघ माहात्म्य भाषा टीका ४.००
२३. फाल्गुन माहात्म्य भाषा १.५०
२४. फाल्गुन माहात्म्य भा. टी० ४.००
२५. गरुड़ पुराण भाषा १.५०
२६. गरुड़ पुराण भाषा टीका ४.००
२७. पुरुषोत्तम मास मा० भा० १.५०
२८. पुरुषोत्तम मा. मा. भा.टी. ४.००
२९. एकादशी माहात्म्य भाषा १.५०
३०. एकादशी मा० भा० टी० ४.५०
३१. चतुर्मास मास मा. स. भा. १·५०
३२. बारहमाह के मा० भा० १५.००
३३. बारहमाह के मा० भा. टी. ३६.००
३४. सप्तवार व्रत कथा भाषा १.२५
३५. बारहमाह के त्यौहार ४.५०
३६. राम उपासना (राम पू०) ४.५०
३७. कृष्ण उपा० (कृष्ण पू०) ४.५०
३८. हनूमान उपा० (हनूमानपू०) ४.५०
३९. शिव उपासना (शिव पू०) ४.५०
४०. दुर्गा उपासना (दुर्गा पू०) ४.५०
४१. विष्णु उपा० (विष्णु पू०) ४.५०

डाक खर्च खरीदार को देना होगा।

हर प्रकार की पुस्तकें मिलने तथा वी० पी० द्वारा मंगाने का एकमात्र स्थान
देहाती पुस्तक भंडार, (V.V. Book) चावड़ी, दिल्ली–६

इस पुस्तक की सहायता से प्रत्येक राज अपनी अमानी दूनी कर सकता है

राजगीरी शिक्षा—राम अवतार 'वीर'

राज मिस्त्रियो ! तुम इस किताब को पढ़कर फर्स्ट क्लास राज बन कर दुगुनी-चारगुनी मजदूरी पा सकते हो। ऐसी किताब अब तक नहीं छपी। मूल्य ६·०० छः रु०। डाक व्यय १.५० पृथक।

एक ही चांस में लखपति बनाने वाला ग्रन्थ

व्यापार चमत्कार (तेजी मन्दी) ले०—पं० रतीराम शर्मा

[तैयार माल बायदा का भविष्य फल]

धन खोकर जीवन से निराश हुए लोगों के लिए हमने यह उपरोक्त पुस्तक तैयार की है। ग्रह तथा नक्षत्र आदि का पूरा-पूरा विचार इसमें मिलेगा। साथ-साथ पुस्तक में रूई, सूत, शेयर, ऊन, सोना, चाँदी, तांबा, लोहा आदि धातु तथा गुड़, खाँड, खसखस, इलायची, काली मिर्च, मसाला, मूँगफली, करयाना, जवाहरात, तिल, तेल, सरसों, बाजरा, अलसी, गेहूँ, चावल, खली, बिनौला, लकड़ी, रंग आदि हर एक वस्तु की तेजी मन्दी के बहुत से अचूक सुनहरी चांसों के योग आसान हिन्दी भाषा में खोलकर लिखे गये हैं। जिन गुप्त भेदों को हज़ारों रुपये खर्च करने पर भी ज्योतिषी लोग नहीं बताते थे, वह सब तेजी मन्दी के गुप्त भेद लिख दिये हैं। यदि आप धन कमाकर लक्षाधीश बनना चाहें तो इसे मँगा कर देखने में देरी न करें। व्यापारियों की यह जान है। व्यापार में हानि उठा चुके हुए व्यापारी भी यदि इस पुस्तक को गौर से विचारेंगे तो यह भी कभी न कभी अपना घाटा पूरा कर ही लेंगे। इस पुस्तक की भविष्यवाणियाँ बिल्कुल सच्ची होती हैं। मूल्य केवल ५.०० पाँच रुपया, डाक व्यय १·५० अलग।

क्या आप जीवनसे निराश हो चुके हैं ? समझ बैठे हैं कि आपका रोग जाने का नहीं, तो प्राकृतिक चिकित्सा का सहारा लीजिये। यह शरीर मिट्टी, पानी, धूप और हवा के सेवन से नवीन हो सकता है। हमारी पुस्तक—

प्राकृतिक चिकित्सा सार—के० प्रसाद

सइ पुस्तक में आपको प्राकृतिक चिकित्सा के साधन, जल, धूप, आसन, प्राणायाम, मिट्टी, वायु, मालिश, उपवास उचित आहार की विधि समझाई और बताई गई है। सूर्य किरण चिकित्सा, धूप कल्प और विचार शक्ति के प्रयोग से भी आप परिचित होंगे। अपना स्वास्थ्य लौटाने के साथ-साथ अपने कुटुम्ब वालों और इष्ट-मित्रों को प्राकृतिक साधनों द्वारा रोग-मुक्त और स्वस्थ रहने की सलाह देने योग्य हो जायेंगे। पृष्ठ ५०० चित्र ३०, मूल्य ८।) सवा आठ रु० डाक व्यय १.५० पृथक्।

हर प्रकार की पुस्तकें मिलने तथा वी. पी. द्वारा मँगाने का एक मात्र स्थान

देहाती पुस्तक भंडार, (V. V. Book) **चावड़ी, दिल्ली-६**

इलै० वायरमेन की परीक्षा में निसन्देह सफलता दिलाने वाली पुस्तक

इलैक्ट्रिक वायरिंग—प्रो० नरेन्द्रनाथ

इन्जीनियरों, इलैक्ट्रीशियनों, विद्यार्थियों और सब मनुष्यों के लिए जो कि बिजली के बारे में ज्ञान प्राप्त करना चाहते हों, इलैक्ट्रिक वायरिंग नाम की पुस्तक अत्यन्त लाभप्रद सिद्ध होगी, जिसमें वायरिंग के विषय में जगह-जगह चित्र, नक्शे तथा टेबुल और फोटो ब्लाकों द्वारा पूरी-पूरी जानकारी कराई गई है, जिसको वायरमैन के सिलेबस के आधार पर तैयार किया गया है, जिसमें हाउस वायरिंग, पावर वायरिंग, ओवरहैड वायरिंग, अण्डर वायरिंग, डाइरैक्ट करंट मोटर वायरिंग, आल्टरनेटिंग करेंट मोटर वायरिंग और कार वायरिंग, फिलोरेसैंट ट्यूब वायरिंग, रेफ़रीजरेटर वायरिंग आदि-आदि का समस्त वर्णन दिया गया है। पुस्तक का मूल्य ४·५० साढ़े चार रुपया, डाक खर्च १·५०।

प्रत्येक देहाती तथा शहरी के काम की पुस्तक सम्पूर्ण दोनों भाग सचित्र

संन्यासियों की गुप्त बूटियाँ (सचित्र)—रामनारायण वैद्य

पहाड़ों की कन्दराओं, पर्वतों की चोटियों और गुफाओं में पड़े हुए साधु, महात्माओं, वैरागियों ज्ञानियों की रिसर्च पूर्ण बात।

किस प्रान्त में कौन-कौन सी बूटियाँ कहाँ कहाँ पाई जाती हैं उनका प्रांतीय तथा वैद्यक नाम क्या है और किन-किन रोगों पर वे लाभ दिखाती हैं, इस पुस्तक में असंख्यों ऐसी जड़ी-बूटियों के गुप्त भेद अंकित हैं जिनके बल पर संन्यासियों की धाक जमी है। वे बूटियाँ जो जंगलों, सड़कों और गाँवों में हर समय मिल सकती हैं, बड़े-बड़े रोगों पर चमत्कार प्रभाव दिखाती हैं किन्तु आप उनके गुणों से अपरिचित हैं। यह अद्वितीय पुस्तक यदि आपके घर होगी तो घर की स्त्रियाँ भी बच्चों व पुरुषों के अनेक रोगों की तत्क्षण चिकित्सा कर सकती हैं। कान में लगा कर सर्प-विष दूर करने, मधुमेह को समूल मिटाने, दुबले शरीर को मोटे करने, ७ दिन में नपुन्सकता दूर करने, बाँझ को पुत्र देने और अंगुली लगाते ज्वर उतारने वाली ऐसी बूटियाँ बताई गई हैं; जिनके चमत्कारी प्रभाव से लोग आपको धन्वन्तरी का अवतार समझने लगेंगे। पृष्ठ ५६५, चित्र सं० २००, मू० ७।।) साढ़े सात रुपया, डाक व्यय १।।।) अलग।

मानसिक ब्रह्मचर्य—फकीरचन्द कानोडिया

शादी के बाद भी सही जीवन व्यतीत करने के लिए बहुत कुछ जानना होता है, यह पुस्तक आपको दुनियादार ही नहीं दुनिया का एक सफल व्यक्ति बना सकती है। सवा छः सौ पृष्ठ की सचित्र सजिल्द पुस्तक मूल्य ६) छः रु०।

हर प्रकार की पुस्तकें मिलने तथा वी० पी० द्वारा मंगाने का एकमात्र स्थान

देहाती पुस्तक भंडार, (V. V. Book) चावड़ी, दिल्ली-६

K. P. SABHA AMBPHA
LIBRARY
No
Date
JAMMU

अपना लोक परलोक सुधारो !

५-६-६४—२६०००

केवल ईश्वर का भजन ही आपको सुख और शान्ति का जीवन प्रदान कर सकता है। जिन्होंने ईश्वर का गायन तथा स्मरण किया है वे सदा ही अमर हैं। —तुलसीदास जी

श्रीमद्भगवत गीता भाषा	३)	शिवपुराणभाषा	८४)	लोक परलोक सुधार	१।)
माहाभारत वतर्ज राधेश्याम	१५)	श्याम सुखसागर	१४)	सरल भाषा रामायण	३)
श्रीमद्भगवत (श्रीलाल)	१०॥)	योग वाशिष्ट सम्पूर्ण	२२)	सरल भागवत	३)
मनुष्य बोध भजनमाला	२॥)	कृष्ण उपासना	४॥)	बड़ा भक्ति सागर	३)
ब्रह्मज्ञान भक्ति प्रकाश	२॥)	देवी उपासना	४॥)	संध्या स्तोत्र पूजा मांड्कर	२॥)
ज्ञानवैराग्य प्रकाश	३)	तुलसीकृत रामायण सटीक	१४)	सनातन भजन दीपिका	२॥)
उपनिषद् प्रकाश स्वामीदर्शानन्द	६)	प्राचीन ब्र० भजन माला	४)	एकादशी महात्म्य भाषा	१।)
बड़ी भजन पुष्पांजली	१।)	राम उपासना	४॥)	गुटका ईश्वर प्रार्थना	॥)
हिन्दी संस्कृत शिक्षा	२॥)	हनुमान उपासना	४॥)	गुटका भक्ति सागर	।=)
भक्त वाणी पृष्ठ ४५६	४॥)	बाल्मीकी रामायण भाषा बड़ा	१२)	मनुस्मृति (सटीक)	४।)
कीर्तन भजन संग्रह	३)	ब्रह्मज्ञान (शंकरदास)	२॥)	अनुभव प्रकाश	२॥)
कबीर भजनमाला गुटका	१॥)	रहदास रामायण	२॥)	वेदान्त छन्दावली सम्पूर्ण	३॥)
महाभारत भाषा बड़ा	१३)	मस्तनाथ चरित	२॥)	ला० ब्र० ब सजिल्द	२॥)
शिवउपासना	४॥)	रुकमणी मंगल राधेश्याम	२॥)	देवी देवताओं की आरतियाँ	४॥)

पुस्तकें मंगाने का पता **देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-६** फोन २६१०३०

Title Printed at Emerson Pri[illegible] D[illegible]oa Kalan, Delhi. Phone : 264773